''भाषा विज्ञान में स्थान नामों के भाषा शास्त्रीय अध्ययन का अनुशीलन''

–डॉ. कृष्णबीर सिंह

सन् 1786 ई. में सर विलियम जॉन्स द्वारा विभिन्न भाषाओं के तुलनात्मक अध्यन के संकेत से वर्तमान भाषा विज्ञान का उद्‌भव माना जाता है। इस नाम से पूर्व भाषा विज्ञान का उद्‌भव माना जाता है। इस नाम से पूर्व भाषा विज्ञान को क्रमश: कम्प्रेटिव ग्रामर, कम्प्रेटिव फिलॉलोजी एवं फिलॉलोजी आदि नामों से सम्बोधित किया गया था। यह सत्य है कि भाषा विज्ञान नाम या यों कहें कि भाषा विज्ञान शब्द पाश्चातय विद्वानों की देन है किन्तु यदि हम इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अवलोकर करें एवं वास्तविकता से परिचय प्राप्त करें तो हमें इसके मूल आधार में भारतीय विद्वानों का अवदान दिखाइै देगा। वेद साहित्य को सर्वाधिक प्राचीन माना जाता है। वेदों में हमें भाषा विज्ञान से संबंधित विभिन्न प्रमाण प्रापत होते हैं। प्राचीनकाल में उक्त विषय को व्याकरण, शब्दानुशासन, शब्द शास्त्र एवं निवंचशास्त्र आदि नामों से जाना एवं अध्ययन किया जाता था। भारतीय मनीषियों ने वैदिक भाषा एवं ध्वनियों को शुद्ध रखने एवं वेदों के रूपों को व्यवस्थित करने के उद्देश्य से अनेकों वर्गीकरण किये तथा इसके लिए उनहोंने शिक्षा शास्त्र का निर्माण किया। विशेषत: वेदों के पाठ भेद के लिए प्रतिशाख्यों एवं शब्दों के क्रम एवं वाक्य रचना हेतु व्याकरण आदि बनाये गये। साथ एक और महत्त्वपूर्ण कार्य भी सम्पन्न हुआ – प्रत्येक शब्द का उचित अर्थ ज्ञात करने हेतु निरूक्त की रचना की गई। निष्कर्षत: वेदों के सामान्यत: छ: विभाग क्रमश: निरूक्त, छंद, कल्प, शिक्षा, ज्योतिष एवं व्याकरण आदि बने। इन छ: विभागों में से निरक्त, शिक्षा एवं व्याकरण का संबंध सीधे रूप में भाषा विज्ञान से माना गया है। भाषा विज्ञान की सम्भावनाएँ संहिताओं के पश्चात रचित ब्राह्मण ग्रन्थों में विशेषत: कृष्ण यजुर्वेद संहिता में, आरण्यकों में, ऐतरेय ब्राह्मण आदि में अधिक बलवति रूप में दिखाई देती हैं।

वैदिक भाषा एवं ध्वनियों को शुद्ध रखने एवं शब्द ज्ञान के मर्म व रहस्य को जानने का क्रम निरन्तर चलता रहा। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु निघण्टु बनाये गये जिनकी सहायता से वैदिक संस्कृत को बोधगम्य एवं अर्थभेद को समझाया जाने लगा। इसी क्रम में प्रतिशाख्यों की रचना हुई। प्रसिद्ध विद्वान यास्क ने निरुक्त की रचना की। निरुक्त में निघण्टु की व्याख्या की गई है। इसमें निघण्टु के प्रत्येक शब्द की व्युत्पत्ति एवं उसके अर्थ पर विचार किया गया है। अत: यह माना जा सकता है कि शब्द व्युत्पत्ति विषय का उक्त ग्रन्थ अत्यन्त प्राचीनतम हैं।

मुनित्रय नाम से अपनी पहचान रखने वाले पाणिनि, पतंजलि एवं कात्यायन ने क्रमश: अष्टाध्यायी, महाभाष्य एवं कथा सरित्सागर आदि ग्रन्थों की रचना की है। यं ग्रन्थ अत्यन्त अद्‌भुत हैं। इसके पश्चात प्राकृत प्रकाश एवं पालि भाषा के ग्रन्थ कच्चायन, मोग्गतलान आदि आते हैं।

कहने का उद्देश्य यही है कि हमारी प्राचीन परम्परा में भाषा विज्ञान का अपना विशिष्ट स्थान था अत: कतिपय विद्वानों द्वारा यह स्वीकार कर लेना कि भाषा विज्ञान की परिकल्पना पाश्चात्य है, आधारविहीन है।

भाषा विज्ञान की सीमा मात्र भाषा तक ही सीमित नहीं होती अपितु भाषा विज्ञान का अन्त: सम्बन्ध व्याकरण, साहित्य, समाज शास्त्र, मनोविज्ञान, शरीर विज्ञान, भौतिक विज्ञान, इतिहास, भूगोल एवं दर्शनशास्त्र से भी बड़ी आत्मीयता एवं गहराई से सम्बद्ध है। आज भाषा विज्ञान अपने विशाल एवं नवीन रूप में प्रस्तुत है। भाषा विज्ञान में कुछेक प्रमख एवं कुछे गौण शाखाओं की उतपतित हो चुकी है। जिनमें ध्वनि विज्ञान, रूप विज्ञान, शब्द विज्ञान, वाक्य विज्ञान, अर्थ विज्ञान, नाम विज्ञान, अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान, भाषा शिक्षण, व्यतिरेकी भाषा विज्ञान, समाज भाषा विज्ञान, शैली विज्ञान एवं मनोभाषा विज्ञान आदि प्रमुख है[1]।

नाम विज्ञान भाषा विज्ञान की नई शाखा के रूप में बड़ी तेजी से उभर रहा है। यद्यपि अभी इस क्षेत्र में पर्याप्त कार्य होना शेष है। किसी भी भाषा के शब्द समूह में नामवाची शब्दों की संख्या सबसे अधिक होती है। इनके नामकरणों पर विचार करना, नामों का अर्थ बतलाना, नामों से जुड़ी संस्कृति का विवेचन करना, ये सब इसी शाखा के काम हैं। नामों का वर्गीकरण, स्थान नाम, व्यक्ति नाम, वस्तुओं के नाम, पशुओं के नाम, पेड़ पौधों के नाम, आदि का वैज्ञानिक विवेचन भी इसके अन्तर्गत होता है। नामों के आधार पर भाषाओं की पहचान होती है। नामवाची शब्द समूह का आदान प्रदान एक भाशा में दूसरी भाषा में सबसे अधिक होता है। इस दृष्टि से नाम विज्ञान का कार्यक्षेत्र बहुत बड़ा है[2]। शनै: शनै: विभिन्न विश्वविद्यालयों में स्थान नामों पर पी–एच.डी. एवं डी. लिट् उपाधि हेतु शोध कार्य हुए हैं एवं हो भी रहे हैं, अत: यह कहा जा सकात है कि भाषा विज्ञान की उक्त शाखा बड़ी शीघ्रता से अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाने का उद्योग कर रही है। भाषा के आवश्यक अंग एवं मानव जीवन से संबंधित स्थान नामों में भाषा का अति प्राचीन स्वरूप एवं इतिहास समाहित है। स्थान नामों से भाषा के विकास एवं क्रम को समझा जा सकता है। विशेषत: विभिन्न कारणों से उत्पन्न भाषाई परिवर्तनों को स्थान नामों के अध्ययन द्वारा ज्ञात करने में सफलता प्राप्त की जा सकती है। इसका मुख्य कारण यह भी है स्थान नामों का सीधा सम्बन्ध वाक्य विज्ञान एवं रूप विज्ञान से भी होता है जो सामान्य शब्दों की रचना प्रक्रिया के सिद्धान्त एवं यौगिक शब्दों के विवेचन सिद्धानत के उपयोग के कारण होता है। इसी भाँति स्थान नामों की उपादेयता एवं प्रासंगिकता कोश विज्ञान तथा शब्द विज्ञान हेतु भी लाभप्रद होती है। स्थान नामों की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह स्वत: ही कालजयी होते हैं। स्थान नामों हेतु न तो किसी कोश शासत्र की

अध्यक्ष-हिन्दी विभाग, एस.एस. जी. पारीक पी.जी. कॉलेज, जयपुर ,9413970222

आवश्यकता महसूस हुई एव न ही कोई अन्य ग्रन्थ की किन्तु फिर भी सालों साल ये नाम अपना अस्तित्व बनाये हुए हैं। इस सन्दर्भ में डॉ. सरयू प्रसाद अग्रवाल कहते हैं–स्थान नाम भाषा की ऐसी जीवन्त शब्दावली हे जिसका सार्वजनिक प्रयोग उस सिक्के की भाँति होता है, जो घिस मँजकर रूपान्तरित तो होता रहता है किंतु उसका मूल्य शताब्दियों तक स्थिर रहता है, अर्थात स्थान नाम में ध्वन्यात्मक और रूपात्मक परिवर्तन तो होते रहते हें पर उसका अर्थ सम्बन्धी महत्त्व कभी कम नहीं होता[3]।

इसी भाँति सम्बन्धी विभिन्न परिवर्तनों पर भूगोल का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है। भूगोल का यह प्रभाव उच्चारण भेद से ध्वनि भेद एवं ध्वनि भेद का प्रभाव पद रचना पर दिखाई देता है। देखा गया है कि भौगोलिक नाम स्थान विशेष से संबंधित होते हैं, का उच्चारण भी उस स्थान विशेश के परिवेश एवं भौगोलिक परिस्थितियों के अनुरूप ही होता है। एक स्थान पर पाया जाने वाला उच्चारण दूसरे स्थान से सर्वथा भिन्नता लिए होता है। इस संबंध में डा. राजमल बोरा ने अपनी पुस्तक भाषा अर्थ और संवेदना में लिखा है– भौगोलिक नामों के साथ क्षेत्र विशेष की जनता की आकांक्षाएँ जुड़ी रहती हैं। इन नामों के नामकरण का आधार चाहे जो रहा हो, उनमें एक बात विशेश रूप से यह लक्षित होती है कि नामकरण से संबंधित शबद उस भाषा प्रकृति के अंग होंगे जो उस भौगोलिक क्षेत्र से संबंधित रहे हैं। निश्चित ही नामकरण में अपनी भाषा को सर्वप्रमि स्थान दिया जाता है। यदि इन नामों के नामकरण में अन्य भाषाओं के शब्दों को स्थान दिया जाता है तो इसका कारण अन्य भाषओां का प्रभाव मानना चाहिए। चूंकि स्थानवाचक नाम समय समय पर दिये जाते रहे हैं अत: नामो के आधार पर इतिहास समझ में आता है। किस शताब्दी में सि प्रकार के नाम प्रचलित रहे होंगे, इतिहास का गहराई से अध्ययन करने वाले मानते जाते हैं। मौर्यकालीन नाम, गुप्तकालीन नामों से भिन्न हैं, इसी प्रकार सुलतान कालीन नाम गुप्तकालीन नामों से भिन्न हैं। तदनुसार मुगलकालीन नाम, ब्रिटिशकालीन नाम और स्वतन्त्रता के पश्चात् रखे गये नामों में भी भेद है। नामकरण की यह प्रक्रिया आज भी जारी है और इस प्रक्रिया में हमारी आकाक्षाएँ तथा हमारे स्वप्नों को विशेष रूप से अभिव्यक्ति मिलती रहती है[4]।

संक्षेप में, सर्वविदित है कि इस ब्रह्माण्ड में कोई भी सजीव या निर्जीव व्यक्ति, वस्तु, पदार्थ, वनस्पति ऐसी नहीं है। जिसका नामकरण न हुआ हो। इन सभी नामों का अन्त: संबंध उस स्थ्ज्ञान विशेष से अवश्य होता है जहाँ वे पाये जाते हैं। अत: यह कहा जाना प्रासंगिक होगा कि स्थान नामों की अपनी एक विशिष्ट परम्परा है जिसमें संस्कृति, सभ्यता एवं विकास आदि सम्पूर्ण ऐतिहासिक तथ्य एवं तत्त्व समाहित होते हैं।

जैसा कि मैं पूर्व में भी कह चुका हूँ स्थान नामों का भाषा विज्ञान में अत्यन्त तीव्रता से विकास हो रहा है। यहाँ विकास से अर्थ है इस शाखा विशेष की ओर आकृष्ट होकर शोध करना। नामों में पूर्णत: वैज्ञानिक आधार समाहित होते हैं। अब हम इन्हीं आधारों को शोधात्मक दृष्टि से देखने का प्रयास करेंगे।

स्थान नामों को तात्विक विवेचन करने हेतु सर्वप्रथम हम स्थान विशेष के नामों को स्वर एवं व्यंजन से प्रारम्भ होने वाले नामों की श्रेणी में विभाजित कर लेते हैं। जैसे अ देवनागरी लिपि का पहना स्वर है इससे प्रारम्भ नाम है– अजमेर, अटारी, अमृतसर, अनूपगढ आदि। इसी भाँति आ स्वर से आरम्भ होने वाले स्थान नाम– आजमगढ़ आमला, आणंद आदि। इ से प्रारम्भ होने वाले स्थान नाम– इन्द्रगढ, इन्द्रपुरी, इन्दों की ढाणी आदि हैं। दीर्घ ई से प्रारम्भ होने वाले नाम भी मिलते हें। वही उ स्वर से प्रारम्भ होने वाले नाम– उदयपुर, उदयपुरवाटी, उदयगढ, उम्मेदनगर, उम्मेद नगर आदि हैं।

वहीं दीर्घ ऊ से प्रारम्भ होने वाले स्थान नाम भी मिलते हैं– ऊँटवाल आदि। ए, ऐ आदि स्वरों से प्रारम्भ होने वाले स्थान नामों की उपलब्धता बहुत अधिक नहीं है।

अब यदि हम व्यंजनों से प्रारम्भ होने वाले स्थान नामों को देखें तो सर्वप्रमि हमें क से प्रारम्भ होने वाले स्थान नाम दिखाई देते हैं– कपूरथला, कालवाड़, कापड़ीवास, कराची, कल्याणपुरा, कानावास, कुणाल, किशनगढ़ कोटड़ा आदि। ख व्यंजन से प्रारम्भ होने वाले नामों पर जब दृष्टिपात करते हैं तो हमें–खेडी, खेड़ा, खेजडोली, खोखावास, खातीपुरा, खो नागोरियान खटवाड़ा, खोरी, खींचन आदि नाम एवं ग व्यंजन से प्रारम्भ होने वाले स्थान नाम– गुढा, गोविन्दपुर, गोविन्दगढ गोल्यावास गोगामेड़ी आदि स्थान मिलते हें। इसी भाँति घ से घंटियाली, एवं च से प्रारम्भ होने वाले स्थान नामों में– चौमू, चैनपुरा, चम्पारन, चौपासनी, चक, चिमनपुरा, चन्डालिया आदि एवं छ वर्ण से प्रारम्भ होने वाले स्थान नामों मे घूघकवास, छीतरोली, छपरा छापला आदि स्थान नाम हैं। ज व्यंजन से प्रारम्भ होने वाले स्थिान नामों मे जगन्नाथपुरी, जयसिंहपुरा, जाटियावास, जवाहर नगर, एवं झ से झालावाड़, झालामण्ड, झाक, झुंड आदि स्थान नाम मिलते हें। इसी भाँति शेष अन्य प्रत्येक व्यंजनों से स्थान नाम प्रारम्भ होते हें सभी का यहाँ विवरण दिया जाना संभव नहीं है।

स्थान नामो के शोध पक्ष पर कार्य करने हेतु हम पुन: स्थान नामों को अन्त्यक्रमानुसार विभाजित कर लेते हैं। इसमें स्वरानत स्थान नाम एवं व्यंजनान्त स्थान नाम के दो वर्ग बना लेत हैं। एवं क्रमानुसार इनका विश्लेषणात्मक अध्ययन करके इनमें समाहित तथ्यों को ज्ञात कर सकते हैं। पुन: स्थान नामों का गहन एवं वैज्ञानिक आधार पर विश्लेषण करने के लिए अनिवार्य है कि स्थान नामों को रूप

विज्ञान के निर्धारित मापदण्डों की कसौटी पर कसकर परखा जाये। इसके लिए हम स्थान नामों में समाहित संबंध त्तव, उपसर्ग, प्रत्यय, विकिरण, समास, अर्थ तत्त्व के भेद एवं संबंध व्याकरणिक कोटियों की रूप रचना आदि का विश्लेषण करते हैं। शोध सुविधा की दृष्टि से एकपदीय स्थान नाम एवं द्विपदीय स्थान नाम तथा बहुपदीय स्थान नाम आदि की श्रेणी बना लेते हैं।

स्थान नामों में हमें जाति बोधक भेदक तत्त्व, विशेषणबोधक भेद तत्त्व, व्यक्ति बोधक भेदक तत्त्व, पशु पक्षी भेदक तत्त्व, विशेषणबोधक भेदक तत्त्व, जलाय, देवी देवता, भौगोलिक स्थिति, संख्या, सीमा, उपाधि बोधक भेदक तत्त्वों की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

इसी भाँति स्थान नामों पर तत्सम, तद्‌भव देशज, विदेशी एवं अर्द्धतत्सम शब्दों का भी प्रभाव देखने को मिलता है। व्याकरणिक एवं ध्वनि परिवर्तनों के आधार पर जब स्थान नामों का विश्लेषण किया जाता है तो इनमें हमें स्वर एवं व्यंजन संबंधी विभिन्न विशेषताएँ दिखाई देती हैं। दूसरा परिवेश एवं देशकाल के प्रभाव को स्पष्टत: व्यक्त करते ये स्थान नाम लिखित एवं उच्चारित रूपों के पर्याप्त अन्तर के साथ भी दिखाई देते हैं।

निष्कर्षत: स्थान नामों का सीधा संबंध प्रकृति से होता है। प्रकृति के प्रत्येक सजीव या निर्जीव प्राणी, वस्तु से स्थान नाम प्रभावित होते हैं। यद्यपि स्थान नामों के निर्माण की प्रक्रिया अत्यन्त प्राचीन है लेकिन यह निर्माण प्रक्रिया सतत रूप से आज भी प्रारम्भ है और भविष्य में रहेगी। चाहे हम राष्ट्रीय स्तर पर, अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर, क्षेत्र विशेष अथवा गाँव नगर शहर विशेष के नाम का तात्विक अध्ययन करें तो हमें उस नाम के नेपथ्य में समाहित रोचक ऐतिहासिक पक्ष का ज्ञान अवश्य होगा। स्थान नामों पर सभ्यता, संस्कृति, धर्म एवं वैचारिकता का सीधा प्रभाव देखने को मिलता है। इसके अलावा उस क्षेत्र में पाये जाने वाले पेड़, पौधे, पशु पक्षी, नदी नाले, पर्वत, झील तालाब आदि का भी प्रभाव स्थान नामों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। मानव समूहों जातियाके विभिन्न नामों का बिम्ब भी स्थान नामों पर दिखाई देता है। भाषा विज्ञान की इस नवीनतम शाखा के त्वरित अग्रसर होने के पीछे हमारी सकारात्मक चिंतन दृष्टि एवं ऐतिहासिक पहलुओं के प्रति धनात्मक सोच है। यद्यपि यह कार्य अतयन्त श्रमसाध्य है किंतु भाषा विज्ञान में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। सामान्य से प्रतीत होने वाले स्थान नामों में भाषा, सभ्यता, संस्कृति परिवेश एवं प्रकृति से संबंधित हजारों पर्तें समाहित हैं जो भाषा विज्ञान का वैज्ञानिक पद्धति द्वारा जानी जा सकती हैं। अत: कहा जा सकता है कि स्थान नाम पूर्णत: वैज्ञानिक आधार पर आधारित होते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ 1,2,3,4

सहायक ग्रंथ :- 1. डॉ. हीरालाल शुक्ल- शब्द भूगोल सिद्धान्त और प्रयोग

2. डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव-भाषा शिक्षण

3. डॉ. रामविलास शर्मा पश्चिम एशिया और ऋग्वेद

4. डॉ. रामनिवास साहू भाषा सर्वेक्षण

5. डॉ. भोलानाथ तिवारी भाषा विज्ञान